

अवसर देखा जाता है कि परीक्षाओं के दौरान छात्र तनावग्रस्त हो जाते हैं। एक भय हावी हो जाता है, जिससे वे परीक्षाओं में बेहतरीन प्रदर्शन नहीं कर पाते। छात्र जो तनावग्रस्त हो जाते हैं, वे बहुत दूर परीक्षा के दौरान तनाव के चलते सफ़्त भूल जाते हैं। दरअसल, हमारा शैक्षिक परीक्षण हाल के दिनों में बेहद प्रतिस्पर्धी हो चला है। मनुष्य बच्चों के सामने गला-काट स्पर्धा होती है। विद्येना यह है कि दुनिया में सबसे बड़ी आबादी वाले देश में रोजगार के अवसर जनसंख्या के अनुपात में नहीं बढ़े हैं, जिससे स्पर्धा और कठिन हो गई है। उच्च शिक्षण संस्थानों में प्रवेश हो या फिर नौकरी के अवसर, वे प्रतियोगियों के मुकाबले बहुत कम होते हैं, जिसकी परिणति छात्रों में बढ़ते तनाव और कालांतर में उसके अवसाद में बदलने के रूप में होती है। यही वजह है कि स्कूल-कालेजों के परीक्षा परिणाम आने पर देश में आत्महत्या करने वाले छात्रों की संख्या अछबारों में बढ़ती है। सुखद है कि अब आईआईटी मद्रास के शोधकर्ताओं ने ऐसे शारीरिक संकेतकों का पता लगाया है, जिससे पता चल सकेगा कि किन छात्रों में परीक्षा के दौरान चिंता बढ़ने का जोखिम अधिक है। इस खोज को शिक्षा प्रणाली में तनाव प्रबंधन व प्रदर्शन सुधारने हेतु बड़े बदलाव की दिशा में प्रगतिपूर्ण कदम माना जा रहा है। हालांकि हमें यह शोध 'बिहेवियरल रिस रिसर्च' में प्रकाशित हुआ है। इससे छात्रों के लिए व्यक्तिगत तनाव प्रबंधन योजना भी तैयार हो सकेगी। यह वैज्ञानिक सत्य है कि तनाव भी व्यक्ति में सतिष्क व हृदय के बीच संचरण-नैनो ट्यूने से तनाव पैदा होता है। ऐसे में आईआईटी मद्रास ने परीक्षा के तनाव को पहचानने के जो जैविक संकेत पहचाने हैं, वे आने वाले समय में परीक्षा तनाव प्रबंधन में मददगार साबित हो सकते हैं। कोशिश है कि अब आईआईटी मद्रास से छात्रों के तनाव जोखिम की पहचान का जा सके। दरअसल, नई शोध की मुख्य बातें दो शारीरिक संकेतों को जोड़ने में निहित हैं। फ्रंटल अल्फा एसिमिटी यानी एफएए, जो कि भागनात्मक नियमन का मस्तिष्क आधारित संकेतक है। दूसरा हार्ट रेट वेरिएबिलिटी, जो हृदय के अनुकूलन नियंत्रण को मापता है। ये संकेत चिंताग्रस्त छात्रों की पहचान करने में मदद करते हैं। शोधार्थियों ने पाया कि जिन छात्रों में एफएए पैटर्न नकारात्मक होता है, उनमें तनाव से हृदय के संतुलन तंत्र की क्षमता कमजोर पड़ जाती है। दरअसल, परीक्षा के लेबर को अधिक फिंक है, तो हृदय की प्रतिक्रिया को भी बाधित करती है। परिणामस्वरूप वे अधिक तनाव में आ जाते हैं। शोध में इन तथ्यों को भी सम्पन्नता का प्रयास हुआ कि छात्र छात्र परीक्षा के तनाव के बावजूद बेहतर प्रदर्शन करने में कैसे सफ़्त हो जाते हैं। वहीं छात्र चिंताग्रस्त होकर परीक्षा में सफ़्त नहीं हो पाते हैं। दरअसल, सात वर नियमित प्रदाई न करने और परीक्षा सामने आने पर वे घबराहट में तनावग्रस्त हो जाते हैं। एनसीआईटी का एक अध्ययन बताया है कि देश में 81 फीसदी छात्र परीक्षा को लेकर तनाव में रहते हैं। उम्मीद है नया शोध का निष्कर्ष समस्या का कारण समाधान करेगा।

डॉ. राजेंद्र प्रसाद शर्मा

आ स्ट्रेलियाई थिंक टैंक लोवी संस्था द्वारा जारी एशिया पॉवर इंडेक्स 2025 में भारत का मेजर पॉवर का दर्जा हासिल करना इस मामले में महत्वपूर्ण है कि भारत शक्तिशाली देशों की कतार में अमेरिका और चीन के बाद तीसरे पायदान पर पहुंच गया है। लोवी द्वारा जारी इंडेक्स में मेजर पॉवर का दर्जा हासिल करने वाला भारत एकमात्र देश है जबकि सुपर पॉवर के रूप में अमेरिका और चीन अपना दबदबा बनाए रखने में कामयाब रहे हैं। भारत ने मेजर पॉवर का दर्जा हासिल कर लिया है पर सुपर पॉवर का दर्जा हासिल करने में अभी भारत को लंबा समय और कड़ी मेहनत व प्रयास करने होंगे।

दरअसल, 8 ग्रेमीमीटर में 100 में से 70 से अधिक अंक अर्जित करने वाले देश ही सुपर पाँवर की श्रेणी में आते हैं और अमेरिका इसमें 80.5 अंक प्राप्त कर सुपर पाँवर बना हुआ है। वहीं, चीन भी अमेरिका की पीछे-पीछे 73.7 अंकों के साथ दूसरा सुपर पाँवर बना हुआ है। सोनालड ट्रम्प के अंकों के बाद अमेरिका ने बहुत कुछ खोया है फिर भी पहले स्थान का ताज आने वाले सालों में भी छिनता हुआ नहीं लगता है। भारत ने अवश्य जापान को पछाड़ कर तीसरा स्थान बनाया है और 40 अंक प्राप्त कर मेजर पाँवर तो बन ही गया है। 40 या 40 से अधिक अंक प्राप्त

करने वाले देश मेजर पॉवर की श्रेणी में आते हैं और यह दर्जा प्राप्त करने वाला भारत अकेला देश बन गया है। पश्चिमाश्रितक के 27 देशों से श्रेय 23 देश मिडिल पॉवर व उससे नीचे की श्रेणी में हैं। हमारा पड़ोसी देश पाकिस्तान इस इंडेक्स में पहले दस में भी स्थान नहीं बना पाया है। पाकिस्तान सूची में 16 वें स्थान पर रहा है। निश्चित रूप से यह भारत के लिए बड़ी उपलब्धि और इंटरनेशनल जगत में भारत के बढ़ते दबदबे और सफल संकेत है। ऑपरेशन सिन्दूर और इससे पहले भी जिस तरह से भारत ने अपनी सैन्य शक्ति का प्रदर्शन किया है और इंटरनेशनल लिटोमोर्षी में भारत की अग्रगामी भूमिका तय की गई है उसका बड़ा प्रभाव पड़ा है।

आर्थिक क्षेत्र में भारत की उपलब्धियों ने इसे तीसरे पायदान पर लाने में खासी भूमिका तय की है। भारत आज दुनिया के देशों में बड़ी आर्थिक शक्ति के रूप में उभरा है और दुनिया के देशों में सबसे अधिक यानी कि विदेशी निवेश में भारत ने चीन को भी पीछे छोड़ दिया है। आस्ट्रेलियाई बैंक टैक लोवी द्वारा 2018 से एशिया पाँचवें इंडेक्स जारी करणा आरंभ किया है। 2025 में एशिया पाँचवें इंडेक्स का सातवाँ संस्करण जारी किया है। लोवी द्वारा 8 पैरामीटर के आधार पर अंक जारी किया जाते हैं। इसमें सैन्य क्षमता, रक्षा नेटवर्क, आर्थिक शक्ति, अन्य देशों के साथ आर्थिक संबंध, कूटनीतिक व सांस्कृतिक संबंध,



लचीलापन, भविष्य के संसाधन आदि पैरामीटरों के आधार पर 27 देशों का मूल्यांकन किया जाता है। इसमें कोई दो राय नहीं कि ऑपरेशन सिन्दूर ने भारत की सैन्य शक्ति और ताकत से दुनिया के देशों को झकझोर कर रख दिया है। सैन्य संसाधनों में आज भारत आत्मनिर्भर होता जा रहा है। इसके साथ ही जिस तरह से भारत की इकोनोमी तेजी से आगे बढ़ती जा रही है उससे दुनिया के देशों में भारत ने अलग ही स्थान अर्जित कर लिया है। भारत में देसी-विदेशी निवेश का जिस तरह का माहौल बना है और जिस तेजी से विपरीत वैश्विक हालातों के बावजूद और यहां तक कि ट्रंप की टैरिफ नीति के बावजूद भारत की अव्यवस्था व विकास का स्तर लगातार बने रहना बड़ी उपलब्धि है। ऑपरेशन सिन्दूर,

क्षेत्र में भारत की उपलब्धियों ने इसे तीसरे पायदान पर लाने में सहायता मिली है। भारत आज दुनिया के देशों में बड़ी आर्थिक शक्ति के रूप में उभरा है और दुनिया के देशों में सबसे अधिक यानी कि 100 से अधिक देशों में भारत ने चीन को भी पीछे छोड़ दिया है। आस्ट्रेलियाई एशियाई लोबी द्वारा 2018 से एशिया पाँवर इंडेक्स जारी करना आरंभ किया गया है। 2025 में एशिया पाँवर इंडेक्स का सातवां संस्करण जारी किया जाएगा। इसका 8 पैरामीटर के आधार पर अंक जारी किये जाते हैं। इसमें राजनीति, अर्थ, नेटवर्क, आर्थिक शक्ति, अन्य देशों के साथ आर्थिक संबंध, टेक्नोलॉजिकल व सांस्कृतिक संबंध, लचीलापन, भविष्य के संसाधन आदि शामिल हैं। टॉप 10 देशों के आधार पर 27 देशों का मूल्यांकन किया जाता है। इसमें भारत का स्थान 10वां है। भारत की मजबूत आर्थिक शक्ति और तेजी से बढ़ती हुई आर्थिक शक्ति ने दुनिया के देशों को झकझोर कर रख दिया है।

आंख से आंख मिलाकर बात करने और आंतरिक व बाहरी निर्णय लेने में सक्षम और स्वतंत्र देश के रूप में उभरा है। हालांकि भारत के सामने अभी चुनौतियाँ बहुत हैं। सबसे बड़ी चुनौती जो विषय से अलग हटकर है वह है हमारे ही लोगों द्वारा विदेशी मीडिया व विदेशी धरती पर देश की छवि खराब करना। होना चाहिए कि लाख राजनीतिक मतभेदों के बावजूद विदेश की धरती पर एक रहना और एक रहने का संदेश देना जरूरी हो जाता है।

रक्षा नेटवर्क को और अधिक विस्तारित करने की चुनौती के साथ ही कूटनीतिक और सांस्कृतिक क्षेत्र में बहुत कुछ करने की आवश्यकता है। अमेरिका की टंप की देशी-विदेशी नीति के कारण अमेरिका के अंकों में गिरावट दर्ज की गई है। देखा जाए तो भारत की सैन्य क्षमता के साथ साथ इकोनोमी के क्षेत्र में क्षमता के तेजी से विकास हुआ है। हालांकि रक्षा नेटवर्क के क्षेत्र में अभी बहुत कुछ किया जाना है।

एशिया पॉवर इंडेक्स 2025 में भारत का मेजर पॉवर बनना और तीसरा स्थान बनाना भारत की दुनिया के देशों में बढ़ती साख का परिचायक है। निश्चित रूप से यह बड़ी उपलब्धि है पर अब भारत को इसे बनाये रखने और अन्य पैरामीटरों के क्षेत्र में भी योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ना है। चुनौतियाँ बहुत हैं पर चुनौतियों से पार पाते हुए ही कुछ अधिक अर्जित करना बड़ी बात हो जाती है। मेजर पॉवर से सुपर पॉवर बनना बड़ी चुनौती है पर साकारात्मक प्रयासों से सुपर पॉवर बनने के लक्ष्य के साथ ही भारत को आगे बढ़ना होगा।

विचार

शीतकालीन सत्र में बढ़ेगा सियासी तापमान

सद का शीतकालीन सत्र 1
दिसंबर से शुरू हो रहा है, जो
19 दिसंबर तक चलेगा। सत्र शुरू
होने से पहले रीवावर को परंपरागुनार
सर्वदलीय बैठक हुई, जिसके नुनार
सरकार की तरफ से दावा किया गया
कि सत्र को सुचारु रूप से चलाने के
लिए विपक्ष के साथ तालमेल बिठाना
जाएगा। वहीं विपक्ष से उमीद जलाई
आई कि वह अपने सवालों को अध्यक्ष
के जाँए सदन में उठाए और
लोकतांत्रिक परंपराओं का निर्वहन
करते हुए संसद की मर्यादा बनाए
रखे। सत्र को अकारण नाबिधत न
करे। जिन लोकतांत्रिक मूल्यों और
मर्यादा की उमीद सरकार विपक्ष से
कर रही है, असल में वहीं अब
भाषाज के लिए सबसे बड़ी चुनौती
बनने वाले हैं।



अहम मुद्दें पर भी विपक्ष सरकार से जवाब मांगेगा। लोकसभा में उपनेता प्रतिपक्ष गौतम गोगोई ने इस तरफ भी ध्यान दिलाया कि यह शायद अब तक का सबसे छोट्टा शीतकालीन सत्र होगा, जिसमें केवल 15 कामकाजी दिन ही होंगे। श्री गोगोई ने कहा कि ऐसा लगता है कि सरकार खुद संसद को डिरल करना चाहती है।

वहीं राजद सांसद मनोज झा ने एक गंभीर बात कही है कि सरकार को तरफ हटादतर राजनीतिक चर्चाएँ आभासी हो जाती हैं, जबकि जनता के बुनियादी मुद्दों को नजरअंदाज किया जा रहा है। मुझे उम्मीद है कि सरकार चुनावों से आगे भी सोचेगी। भारत की जीडीपी वृद्धि से लेकर एसआईआर विषय तक, इन पर व्यापक चर्चा होनी चाहिएय वरना संसद सिर्फ एक संग्रहालय जैसी संसदा बनकर रह जाएगी। दरअसल पिछले सत्रों को देखें तो मनोज झा

की बात ही सच भी दिखती है कि सरकार की दिलचस्पी संसद चलाने से अधिक समय बिताने की है। अगर सत्र चलेंगे तो विपक्षी सांसद सवाल पूछेंगे, जिनके जवाब आज रिकार्डों में देना सरकार की मजबूरी हो जाएगी। इसलिए सत्र सरकार की तरफ से ही कई बार बाधित किया जाता है। पिछले मानसून सत्र में यही हुआ। एसआईएल पर सरकार ने चर्चा नहीं होने दी और विश्व इसकी मांग करता रह गया। नतीजा यह हुआ कि 120 घंटों की जगह केवल 35 घंटे काम हुआ। इस बार भी ऐसा ही होने की संभावना बलवती है। क्योंकि बिहार चुनाव में धोखली के आरोप अब भी बरकरार हैं और इसके बाद प.बंगाल, उत्तरप्रदेश समेत 12 राज्यों में जो एसआईएल चला रही है, उसमें बृथ स्त्रीय अधिकारियों (बीएलओ) की मरीयें गंभीर मुद्दा बन चुका है। तृणमूल कांग्रेस की शुद्धनवा की ही चुनाव

वहीं राजद सांसद मनोज झा ने एक गंभीर बात कही है कि सरकार की तत्पश्चादपर राजनीतिक चर्चाएं आभासी होती हैं, जबकि जनता के बुनियादी मुद्दों को नजरअंदाज किया जा रहा है। मुझे उम्मीद है कि सरकार चुनावों से आगे भी सोचेगी। भारत की जीडीपी वृद्धि से लेकर एसआईआर विषय तक, इन पर व्यापक चर्चा होनी चाहिएय वरना संसद सिर्फ एक संग्रहालय जैसी संरचना बनकर रह जाएगी। दरअसल पिछले सत्रों को देखें तो मनोज झा की बात ही सच भी दिखती है कि सरकार की दिलचस्पी सांसद चलाते से अधिक समय बिताने की है। अगर सत्र चलेंगे तो विपक्षी सांसद चलाते पूर्णेंगे, जिनके जवाब ऑन रिकॉर्ड देना सरकार की मजबूरी हो जाएगी।

आयोग के साथ दो घंटे बैठक हुई, जिनमें दीपसी सांख्ये ने मुख्य चुनाव आयुक्त के मुंह पर ही कह दिया कि चुनाव आयोग के हाथों में बलू लगा है। हालाँकि आश्रय की तह में है कि ज़नेश गुप्ता ने इस बात में अनभिज्ञता जाहिर की कि कई प्रकलप ओ एसआईआर के दबाव में अकाल मौत का शिकार हो चुके हैं। बिहार के बाद चुनाव आयोग एसआईआर को अन्य राज्यों में शुरू कर चुका है। भाजपा भी यह मान रही कि वह बिहार के बाद प.गोपाल को निकल कर लेगी और बाकी राज्यों में भी उसी की जीत होगी। संसद सत्र की तारीखों का काफी पहले ऐलान दीपसी अति आत्मविश्वास को दिखाता है। आम तौर पर संसद सत्र की तारीखों की जानकारी हफ्ते-दस दिन पहले दी जाती है, लेकिन इस बार 8 नवंबर को ही संसदीय कार्य मंत्री

किरण रिजजू ने बता दिया था कि संसद का शीतकालीन सत्र कब से कब तक चलेगा। वह समय बिहार चुनावों का था। जिसमें जमीनी रिप्रेजेंट्स बता रही थी कि एनडीए के लिए हालात अच्छे नहीं हैं। एसआईआर में लाखों वोटों का कटना, कानून व्यवस्था का मामला, बेरोजगारी, महंगाई इन सबके साथ 20 बरसों की नीतीश सरकार के लिए एंटी इन्कम्बेंसी जैसे कारक एनडीए का नुकसान दिखा रहे थे। वहीं महागठबंधन में लोग नयी उम्मीद देख रहे थे। तेजस्वी यादव मुख्यमंत्री के लिए जनता की पहली पसंद लगातार बने रहे और राहुल गांधी की लोकप्रियता बिहार में नरेन्द्र मोदी से ज्यादा थी, यह कई सबों में जाहिर हुआ। लेकिन भाजपा के नेता पूरी तरह आश्चर्य से कि कुछ भी हो, संसद उन्हीं की बनेगी।

भारत विश्व के लिए आदर्श और प्रेरणादायी देश बनेगा

अवधेश कुमार
अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि
दरि के शिखर पर ध्वजारोहण के
साथ शांतिपूर्ण परंपरा के अनुसार
समागम कार्य पूर्ण हो गया। विर्योधियों
की प्रतिनिधियाँ वैसी ही हैं जैसी 22
जनवरी 2024 के प्राण प्रसिद्ध के
समय थीं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और
श्रीय स्वयंसेवक संघ के
अध्यक्ष चालक डा. मोहन भागवत के
सहज दबाने के साथ ध्वज का धीरे-
धीरे ऊपर चढ़ाना और अंततः मंदिर
के शिखर पर विराजमान होकर
सहजता भारत के बहुत बड़े वर्ग के
एक वेदनाओं से युक्त संघर्ष के युग
का समापन और नये युग के सूत्रपत
का साक्षात् स्वरूप बन गया।

सच है कि राजनीतिक और गैर-राजनीतिक विश्व में कभी भी श्रियमदिर निर्माण कार्य तो छोड़िए, इसके बिनाचर का समर्थन नहीं किया। विश्व और परोक्ष इसके मार्ग में जनती अडचन में डाली जा सकती थीं। ली गई। जिन लोगों ने शास्त्रों में णित अयोध्या को ही काल्पनिक णवित करने के लिए इतिहास के ण पर पुस्तकें लिखवाई, अभियान लाया। न्यायालय में इसके विरुद्ध कदम लड़े और इलाहाबाद उच्च णयालय से लेकर उच्चतम णयालय के निर्णय पर आज तक सन खड़ा करते रहे हैं, उनसे हमें णकारात्मक प्रतिक्रिया या समर्थन करने को उम्मीद नहीं करनी चाहिए। णरा रविश्व, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी णौर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के

संरसघचलक ड़.डोहन ड़ागवत के उडुधनत के ड़ाव ड़े ड़लकुल सड़नत ड़ी। उतर ड़रेश के ड़ुडुधड़डी ड़ोडी आदलतनथ क सवर ड़ी ऐसल ड़ी थल? ड़ारत क सडी सड़ड़ और रलड़ के लशु क ड़थलथ कलतुन के कलरण सवर ड़े ड़नड़नत ड़लड़ ड़ुडुध स्वलड़लक ड़ै। ड़रलनड़डी नरेंद्र ड़ोदी ने अगुर 2047 तक वलकसल ड़ारत के लशु क ड़लद ड़ललते हुड़ धुवरुरोहन के सलथ सड़लड़ कलल ड़ो ड़ारत को सड़ड़ने ड़नड़नत के ललए ड़ह ड़लकुल स्वलड़लक ड़ै। ड़लहें सड़ड़ नहल ड़ा सड़ड़ते हुड़ ड़ी रलजनलतलक रूड़ से वलरोध करनल ड़ै उनेके ललए ड़ह उड़ास और वलरोध कल हल वलष ड़ुडुधल। नलत अरतल सरल ड़ै। कलसी ड़ी सड़लज के अंदर ड़ह ड़ाव ड़लड़ ड़ललल ड़ल कल आरुकी ड़डूडूण सड़थतल को धरुड़ से नलड़रलत ड़ै वलह कड़ल कलतुनलओ, ड़लसुको और ड़ुतुद हलत तक कलतुनलधुवसलसुके से ड़री ड़ै तो उसके अंदर एक सड़लज और रलड़ के रूड़ ड़े ड़डे लशु ड़ने की ड़ुरेणल कल सड़ ड़ैड़ होनल कलड़न हो ड़लए। शुरीरत ड़ुडुध आदलतन ड़े जललल एक सलड़लन ड़ंदर के ललए नहल थल ड़ललक उसकल लशु सलसुकुतलक, धलरुड़लक, रलड़ुड़ ड़ुनललरुणरुण तथा लललुड़ी ड़ुरेणल सुतलड़ड़ करन के ललए थल तलकल ड़ारत ड़लगुत रहे और हड़ सड़ ड़ेश को शुरीष ड़र ले ड़ाने के ललए ड़रणण से संकललत हो। सनलतन ड़रड़ल ड़े शलखर ड़र लहरते धुवज को ड़ंदर कल रलशुक, ऊरुज वल

वाहक और पूर्णता तथा ईश्वर की उपस्थिति का प्रतीक माना जाता है। ध्वजा से ही मंदिर को पूर्णता प्राप्त होती है। कौन सा निशान रामलला के धाम की पवित्रता और युगों तक कायम रहने वाली सनातन परंपरा का प्रतिनिधित्व करेगा इसके चयन के लिए अनेक ग्रंथों को खंगाला गया। रामचरितमानस, भारत की सभी भाषाओं के रामायण देखे गए। विश्वकर्मा वास्तु शास्त्र के अध्याय 42 में ध्वजाओं के लक्षणों का विस्तृत वर्णन है। महाभारत, ऋग्वेद, विष्णुधर्मोत्तर पुराण में ध्वज का वर्णन है। इसमें भगवान विष्णु के ध्वज का रंग पीला और सुनहरा बताया गया है जो इनके अवतार होंगे उनके ध्वज का रंग केशरिया और पीताम्बर होगा। सूर्यवंशी होने के कारण सूर्य का निशान अंकित है। सूर्य जीवतता और ऊर्जा का भी प्रतीक होता है। रघुकुल का राजवंशी निशान होने के कारण कोविदार वृक्ष का अंकित किया गया है। हरिवंश पुराण में उल्लेख है कि महर्षि कश्यप ने पारिजात के पौधे में मंदर के गुण मिलकर इसे तैयार किया था। वाल्मीकि रामायण के अयोध्या कांड के अनुसार विव्रकट में नववास के दौरान भगवान राम ने लक्ष्मण को ध्वजों से विभूषित अश्व और रथों से आती हुई सेना की सूचना दी और इसके बारे में पता लगाने को कहा। इसे देखकर लक्ष्मण ने कहा कि 'निश्चय ही दुष्ट दुर्युद्ध भरत स्वयं सेना लेकर आया है।'

राशिफल



 **मेष:-** कोई छेटी बात भी परिवार के तनाव का कारण बन सकती है। महत्वपूर्ण प्रयत्न की सार्थकता नये उत्साह का संचार करेगी। सामाजिक गतिविधियों में क्रियाशीलता बढ़ेगी।

 **बुधभ:-** हर घटना से आपको सीख लेने की जरूरत है। नये क्षेत्र में निवेश से पूर्व बुद्धिजीवियों से विचार-विमर्श करें। भविष्य के प्रति निराशाजनक विचारों को मन पर हावी न होने दें।

 **मिथुन:-** निकट संबंधों में मधुर संवाद से अपनी सुन्दर छबि बनावें। कुछ महत्वपूर्ण अभिलाषाओं की पूर्ति होने के आसार हैं। सामान्य दिनचर्या के साथ बीतें

रहे जीवन में उत्साह का अभाव रहेगा।
कर्क:- भविष्य के प्रति मन में
 चिंताएं उत्पन्न होंगी। किसी कार्य को छोटा-
 बड़ा समझने के बजाए अपने कर्तव्यों का ठीक

 **सिंह:-** पारिवारिक दायित्वों की चिंता उत्पन्न होगी। स्वास्थ्य के प्रति लापरवाही न बरतें एवं जीवन साथी के स्वास्थ्य के प्रति ध्यान दें।

कन्या:- छोटी-छोटी पारिवारिक बातों को बाहरी लोगों से न कहें। भावना से उद्बलित मन सगे-संबंधियों के सुख-दुख के प्रति चिंतित होगा।

 **तुला:-** वक्त के साथ समझौता कर चलने की चेष्टा करें। अपने कार्यक्षेत्र को ही अपनी पूजा समझे और अपने को उसी दिशा की ओर केंद्रित करें। रोजगार में अपनी क्षमता का पूर्ण लाभ उठाएंगे।

 **वृश्चिक:-** जीवन में सही लक्ष्य व सुदृढ़ता को सुनिश्चित करें तभी जीवन में सही प्रगति कर सकते हैं। किसी पुराने संबंधी से विशेष निकटता की अनुभूति करेंगे।

 **धनु:-** किसी भी प्रयास में आर्थिक अभाव अवरोधक होगा। साहस व बुद्धिमत्ता से पुरानी समस्याओं पर बिजय प्राप्त कर सख की अनभति करेंगे।

मकर:- बुद्धिमत्ता व परिश्रम का मिला-जुला संजोग का भरपूर लाभ उठाएँगे। आर्थिक क्षेत्र में लाभ के अवसर प्राप्त होंगे।

कुंभ:- शासन-सत्ता में व्यस्तता बढ़ेगी। मन आर्थिक सुदृढ़ता हेतु चिंतित होगा। सामाजिक सक्रियता से मान-प्रतिष्ठा बढ़ेगी। राजनीति से जुड़े लोगों को ग्रहों की अनुकूलता का लाभ मिलेगा।

मीन:- महत्वाकांक्षी अभिलाषाएं मन में असन्तुष्टि पैदा करेंगी। तामसिक विचारों को मन से दूर रखें। विपरीतलिंगी संबंधों के प्रति आकर्षण बढ़ेगा। भौतिक आकांक्षाओं की पूर्ति में व्यय अपेक्षित

देवी एम. चेरियन

ऐस देश में जहां लोग शनिवार को अपने नाखून नहीं काटते या तीन ज्योतिषियों और पड़ोस की आंटी से पूछे बिना प्रॉपर्टी नहीं खरीदते, यह मानना बिल्कुल नादाना होगी कि भारतीय नेता, क्रिकेटर और फिल्म स्टार सिर्फ लॉजिक से चलते हैं। पावर पॉलिसी से, टैलेंट ट्रेनिंग से और फेम कड़ी मेहनत से मिल सकती है लेकिन पैसे के पीछे कहीं, अभी भी एक छोटा नायरल तोड़ा जा रहा है, दरवाजे पर एक नींबू रखा जा रहा है और बस किसी भी स्थिति के लिए प्रार्थना फुसफुसाई जा रही है।

चलिए राजनीति से शुरू करते हैं। गंभीर चेहरों, लंबे भाषणों और अजीब समय पर लिए गए फैसलों की दुनिया देखिए। यह कोई सीक्रेट नहीं है कि नरेन्द्र मोदी, एक मजबूत और निष्णय होने वाले नेता के तौर पर देखे जाने के बावजूद, आध्यात्मिक प्रक्रिया में गहराई से जुड़े हुए हैं।

बड़े राजनीतिक मौकों से पहले लेते हैं।
केदारनाथ, काशी विश्वनाथ और दूसरी खुले
पवित्र जगहों पर उनके दौरे दूर-दूर तक थीं।
जाने जाते हैं। जहां समर्थक आस्था ज्योति
देखते हैं, वहीं आलोचक रणनीति राजनीति

बड़े राजनीतिक मोकों से पहले केदारनाथ, काशी विश्वनाथ और दूसरी पवित्र जगहों पर उनके दोरे दूर-दूर तक जाने जाते हैं। जहां समर्थक आस्था देखते हैं, वहीं आलोचक रणनीति देखते हैं लेकिन किसी भी तरह से, देश ने देखा है कि उनके करिश्म के असर दौर अवसर भगवान को चुपचाप प्रणाम करने से शुरू होते हैं। इसी तरह, भारत में लंबे समय से सुना जा रहा है कि अलग-अलग रितियों के नेता चुनाव से पहले चुपचाप ज्योतिषियों से सलाह लेते हैं। दित्ता गांधी जैसी पुरानी नेता खुले तौर पर आध्यात्मिक सलाह लेती थीं और यह सब जानते हैं कि ज्योतिषियों ने कभी कांग्रेस की राजनीतिक प्लानिंग में भूमिका निभाई थी। कहा जाता है कि दिल्ली में काँग्रेस को वास्तु शास्त्र के हिसाब से एक से ज्यादा बार रीडिजाइन किया गया है। दीवारें बदली गई हैं, शीशे लगाए गए हैं, फव्वारे लगाए गए हैं। यह सब यह पक्का करने के लिए किया गया है कि राजनीतिक एनर्जी उत्तर-पूर्व की ओर बहे और मुंबईत में न पड़े।

जाने हैं लेकिन किसी भी तरह से, देश देखा है कि उनके करियर के अहम अवसर भगवान को चुपचाप प्रणाम करने से शुरू होते हैं। इसी तरह, भारत लंबे समय से सुना जा रहा है कि लाला-अन्ना पार्टियों के नेता चुनाव से पहले चुपचाप ज्योतिषियों से सलाह लेते हैं। इंदिरा गांधी जैसी पुरानी नेता लेते तौर पर आध्यात्मिक सलाह लेती और यह सब जानते हैं कि ज्योतिषियों ने कभी कांग्रेस के राजनीतिक प्लानिंग में भूमिका निभाई थी। कहा जाता है कि दिल्ली में ऑफिस को वास्तु शास्त्र के हिसाब से एक से ज्यादा बार रीडिजाइन किया गया है। दीवारों बदली गई हैं, शोशे लगाए गए हैं, फव्वारे लगाए गए हैं। यह सब यह पक्का करने के लिए किया गया है कि राजनीतिक एनर्जी उत्तर-पूर्व की ओर बहे और मुसोबत में न पड़े। नेता इंदिरा ने इससे इंकार करेंगे लेकिन फिर भी पार्लियामेंट कॉम्प्लेक्स में धीरे-धीरे और सावधानी से खुद रखते हुए करीब आये जैसी कि फर्श खदो ही बुरी

क्रिस्मत के प्रति सैसिटिव हो। अगर राजनीति ड्रामा है तो क्रिकेट भाव है। और अगर कोई ऐसा मैदान है जहाँ अर्धव्यक्ति सच में स्ट्रेटिज की लाइट से ज्यादा चमकता है तो वह क्रिकेट पिच है। सचिन तेन्दुलकर अपना बायाँ पैड पहले पहनने के लिए सम्राहुर थे। भगवान या इत्तेफ़क़, किसी ने भी अर्द्ध बदलने की हिम्मत नहीं की। धोनी जो बाहर से बर्फ़ की तरह ठंडे हैं, मिलिट्री डिस्प्लिन के साथ रूटीन पर टिके रहने के लिए भी जाने जाते हैं। एक समय में उनके लंबे बाल सिर्फ़ एक स्ट्राइल नहीं थे। फैंस का मानना था कि यह टीम इंडिया के लिए किसी लकड़ी चाम से कम नहीं है। फिर विपट कोहली हैं, जिन्हें बड़े टूर्नामेंट से पहले मंदिरों में जाते, प्रव्रता योग बांधते और यह पक्का करते देखना था कि कुछ आध्यात्मिक आदतें उनकी जिंदगी का हिस्सा बनी रहें। और कौन भूल सकता है कि कैसे पूरा देश अचानक अच्छी वाइस्म में विश्वास करने लगा जब अनुका शर्मा को टैशन वाले मैचों के दौरान स्टैंड्स में मैडिडेशन करते देखा गया। अगर इंडिया जीता तो लोग मजाक में कहते थे कि ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि बॉलर तक 'पॉजिटिव योग एनर्जी' पहुँच गई थी। सबसे निडर

बॉलर और हिटर के दिमाग में यह अन्तर्द्वन्द्वी लियस्ट होती है। वही मोजेजें वही ग्लन्स, वही वार्म अप प्लेसिलियस प्लेसिच तक जाने का वही रास्ता तय होना चाहता है। रास्ता बदलो और अचानक विकल हो गिर जाता है। साईंस भले ही हमारे लोलेकिन क्रिकेट फैस इस पर आपस लड़ते हैं। और अब वही बॉलीवुड पर आया है। एक ऐसी दुनिया जो डायरेक्टर नहीं बल्कि स्टार चलाते हैं। स्क्रीन पर भी और आसमान में भी। अजय देवगन हल्ले समय से नंबर 9 से जुड़े हैं, उन्होंने अपनी कई फिल्मों में इतिहासिक जो रिलीज की हैं क्योंकि न्यूमरोलोजी इसे पसंद करती है। एक कपूर ने अपने शो 'क्योंकि सास कभी बहू थी' के टाइटल में एकस्व अक्षर इसलिए जोड़े क्योंकि उन न्यूमरोलोजिस्ट ने सलाह दी थी कि ऐसा सफलता के लिए एक बूस्टर शॉट है। और उस फामूले से कौन बरस कर सकता है जिसने सालों तक इंडियन टैलीविजन पर राज किया। शाहरुख खान अपनी गहरी आस्था के लिए जानाते हैं और अक्सर बड़ी रिलीज पहले धार्मिक जगहों पर करते हैं। उल्टा खान, जिनके करियर ने बहुत सलाह-चढ़ाव देखे हैं, वे भी प्रोटैन्ट धर्माचार्य रखने के लिए जाने जाते हैं।

